अतिरथी : संरचना आरो शिल्प

अतिरथी : संरचना आरो शिल्प

लेखक
डॉ. अमरेन्द्र

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८-८१-९६१४४६-३-०

प्रथम संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
पचास रूपये मात्र

Atirathi : Sanrachna Aaro Shilp
Dr. Amrendra Rs.50/-

अंगिका में वाचिक परंपरा रों मनीषी आलोचक

प्रो. मनमोहन मिश्रजी

के स्मृति में

—अमरेन्द्र

प्राक्कथन

'अतिरथी' खंडकाव्य कें पढ़ै के अवसर हमरा तभिये मिललों छेलै, जबें ई प्रकाशन वास्तें तैयार छेलै, भूमिका लिखै के सौभाग्यो मिललै। तखनी की मालूम छेलै कि सारस्वत जी के ई खंडकाव्य तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अंगिका विभाग के पाठ्यक्रम में भी शामिल होय जैतै। एकरों जानकारी जबें विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मधुसूदन झा जीं देलें छेलै, तें सच्चे में बेहद खुशी होलों छेलै।

बाद में जबें यही खंडकाव्य के अन्तरवस्तु जानै लें हमरों छोटों बेटा अभिनंदन, पुत्रवधू श्रीति आरो बेटी वसुंधरा नें प्रश्न करना शुरू करलकै, तें बताय के क्रम में हमरा कुछ-कुछ लिखहौ लें पड़लै।

'अतिरथी' पर केन्द्रित ई लघु पुस्तक पढ़ैलों- लिखैलों वहा सामग्री सिनी के संशोधित-परिमार्जित रूप छेकै।

शायत ई लघु आलोचना पुस्तक 'अतिरथी' काव्य के गरिमा कें कुछ उद्घाटित करें पारें आरो एकरा सें सहृदय पाठक साथें छात्रो के अध्ययन में कुछ मदद मिली जाय, यही सोची कें बिखरलों सामग्री कें पुस्तक के रूप दै रहलों छियै। विश्वास छै, कुछ-नें-कुछ काव्य जिज्ञासु लेली लाभकारी सिद्ध होवे करतै! आरो एक निवेदन कि ई किताब में 'अतिरथी' खंडकाव्य के पृष्ठ संख्या, यही किताब के पृष्ठ संख्या के मोताबिक छै, जबेंकि उदाहरण रूपों में जे काव्य-पंक्ति उद्धृत छै, ओकरों पृष्ठ संख्या मूल किताब के अनुसारे छै।

—अमरेन्द्र

रामनवमी, ३० मार्च २०२३

सम्पर्क : लाल खां दरगाह लेन
सराय, भागलपुर, बिहार, पिन-८१२००२
मोबाइल :-८३४०६५०६७६, ९६३६४५१३२३

विषय-क्रम

- कवि नंदलाल यादव सारस्वत : एक परिचय/६
- अतिरथी के नायक : कर्ण/१२
- इन्द्र/१७
- अतिरथी में आधुनिकता/२१
- अतिरथी में सौन्दर्य-साधना/२५
- अतिरथी के पाँचमों सर्ग/२८
- काव्य रों शीर्षक 'अतिरथी' के औचित्य/३२
- अतिरथी : संरचना आरो शैली/३५

●●

अतिरथी (खंडकाव्य)/३६

कवि नंदलाल यादव सारस्वत : एक परिचय

बाँका जिला रों रजौन प्रखंड आरो रजौन प्रखंड के ही एक छोटों-सन गाँव—लपटोलिया यानी नवटोलिया। जना अंगिका में नयकी लपकी बनी जाय छै; होनै के नवटोलिया लपटोलिया बनी गेलों छै आरो यहा गाँव में सरस्वती देवी के गोदी में एक शिशु के जन्म सन् दस दिसम्बर उन्नीस सौ पैंसठ ई. में होय छै, जे गाँव के माँटी-धूल में खेलतें-कूदतें आखिर एक दिन ई. नंदलाल यादव सारस्वत कवि बनी जाय छै। तें, सारस्वत कवि बनै में माय सरस्वती देवी के जे भी भितरिया कामना रहें, कवि रों पिता जगदीश प्रसाद कापरी जी के ई जरूरे प्रबल इच्छा छेलै कि बालक नंदलाल पढ़ी-लिखी कें एक योग्य सामाजिक व्यक्ति बनें। है बात हौ प्रसंग सें सामना आवै छै, जबें बाबू अपनों पुत्र लेली एक सुंदर कलम कीनी कें लै आनलें छेलै, तबें, जबें कि हौ समय कम-सें-कम मिडिल इस्कूल तांय, लत्तर वाला कलम सें ही लिखै के जमाना छेलै। माय-बाबू रों यही भीतरी-बाहरी कामना के कारण बालक नंदलाल नें इस्कूलीये दिनों में कविता के पंक्ति जोड़ना सिखलें छेलै आरो शिक्षा के प्रति लगन हेनों जगलै कि गाँव छोड़ी कें भागलपुर आवी गेलै, कैन्हें कि गाँव में उच्चों शिक्षा के तखनी वेवस्थाहै कहाँ रहै। भागलपुर ऐलै, तें राजकीय बहुप्रावैधिकी संस्थान सें विशिष्टता साथें असैनिक अभियंत्रण में डिप्लोमो प्राप्त करलकै।

फेनु सरकारी नौकरी में ऐलै, तें जिनगी के व्यस्ततो बढ़ी गेलै। नौकरिये के लैकें नै, परिवारो के। पत्नी, बाल-बच्चा आरो फेनु नौकरी के रक्षा में यहाँ-सें-वहाँ बदली के चक्कर।

मतुर है सबके बीचा में ई. नंदलाल यादव साहित्य कें कभियो नै भूलें पारलै। गाँव में कविता के पहाड़ा सिखलों शहर में आवी कें आरो

निखरें लगलै। हास्य-व्यंग्य के कवि रामावतार राही के साथ मिललै, तें व्यंग्य के कवि रूपों में मंचों पर लोकप्रियता पावें लगलै। ई बात दू हजार एक ई. के आसपास के छेकै।

मंच पर आरो मंच सें बाहर गोष्ठियो में हिनकों हिन्दी व्यंग्य कविता हेनों लोकप्रिय होलै कि जल्दीये हिनकों हेनों कविता के एक संग्रह 'कोलाहल' नामों सें ऐलै आरो 'कोलाहल' के लोकप्रियता के बाद हिनकों साहित्य-साधना आरो तीव्र गति सें आगू बढ़ी चललै—जेकरे परिणाम छेकै कि बहुत कम समय के बाद हिनकों अंगिका व्यंग्य कविताहौ के एक संग्रह 'हूक' शीर्षक सें प्रकाशित होलै । ठीक यहीं सें हिनी मुक्तक काव्य के प्रति लगाव छोड़ी कें प्रबंध-सृजन के साथ होय गेलै जेकरे कारण हिनी अतिरथी, भारत-भाग्यविधाता, अंगेश कर्ण, शहीद महेन्द्र गोप हेनों अंगिका के उल्लेखनीय प्रबंधकाव्य दिएँ पारलकै। अंगिका काव्य के बादो हिनकों कै एक किताब प्रकाशित छै—जैमें चर्चित अंगिका कहानी के संग्रह 'फैसला' भी शामिल छै।

हिनकों सारस्वत काव्यप्रतिभा के यहो एक सबूत छेकै कि हिनकों एक गीत कें जिलागीत कें राजकीय सम्मान मिलै के अतिरिक्त दस हजार राशियो प्राप्त होलों छेलै। ई बात सन बीस सौ ग्यारह ई. के छेकै। जे भी हुएँ हिनकों साहित्य पर तब तक पूरा-पूरा बात नै करलों जावें सकें, जबें तांय कि हिनकों सम्पूर्ण साहित्य प्रकाशित नै होय जाय छै । मालूम होलों छै कि हिनी किशोरावस्था में रंगमंच के मंजलों नायक छेलै, आरो तखनी कैएक मंच लेली नाटको लिखलें छेलै ।

कहै छै—रचनाकार के कृति ओकरों संतान होय छै। प्रकाशित कृति में लेखक के पूरे व्यक्तित्व झाँकलों जावें पारें। अतिरथी, भारत-भाग्यविधाता, शहीद महेन्द्र गोप में तें कविवर नंदलाल यादव 'सारस्वत' के व्यक्तित्व, हिनकों विचार के उदात्तता सबकुछ झलकी उठलों छै। सारस्वत जी खाली मानवीय मूल्य के पक्षधर ही रहें, हेनों बात नै, भागलपुर में विश्वेश्वरैया के स्मृति में बनलों पुस्तकालय में हिनकों योगदान ई बताय लें काफी छै कि हिनी शिक्षा आरो साहित्य कें कत्तें महत्व देलें ऐलों छै। विज्ञान के प्रति झुकाव होला के बादो धर्म के प्रति हिनकों विराग कभियो नै रहलै। है संस्कार हिनी में अपनों माय-बाबू सें

विरासत रूपों में पैलें छै आरो यहा धार्मिक संस्कार के कारण हिनी किशनगंज में राधा-कृष्ण मंदिर लेली अपनों जमीन दान में दै देलकै । आयकों समय में ई सामान्य बात तें नहिये छेकै । हेन्है कें लोककला के प्रति हिनकों रुचि के इतिहास लिखैवों अभी बाकिये छै कि हिनी केना अपनों साथी सिनी के साथ मिली कें रात-रात भर जगी कें मरतें लोकनाटक के संस्कृति कें बचैलें छै ।

अपनों माँटी, अपनों देश लेली जे उदात्त विचार कविवर सारस्वत में मजबूती के साथ दिखै छै, ऊ तें हिनकों संपूर्ण साहित्य आरो जीवन शैलीये सें कोय समझें पारें। हिनको संबंध में कोय कवि के ई कथन कत्तें सटीक छै :

अंगदेश के कवि सिनी में
महाकवि की कम!
पर 'सारस्वत' के बात अलग छै
सब भावों में सम!
घर सें लैकें गाँव-देश तांय
खाली हित के बात,
नंदलाल यादव के मानी
सतकरमों के साथ!

अतिरथी के नायक : कर्ण

जों भारतीय काव्यशास्त्री, जे नाटक आकि काव्य के नायक पर विचार करलें छै, के नायक-संबंधी धारणा पर मिलाय-जुलाय कें विचार करलों जाय, तें काव्य के नायक में जे गुण के होना आवश्यक छै, हौ छेकै कि ऊ युवा हुऍ, रूपवान हुऍ, दानवीर हुऍ, तेजस्वी हुऍ, ज्ञानी हुऍ, लोकरंजक हुऍ, विनीत हुऍ, अहंकाररहित हुऍ आरो हेने गुणों सें संपन्न नायके धीरोदात्त नायक कहावै छै।

ई गुणों के बादो भारतीय आचार्य नें एक आरो विशेषता के उल्लेख करलें छै कि नायक उच्च कुलोदभव हुऍ! मतर देखलों जाय तें उच्च कुल में जन्म लेना आदमी के वश के बात नै हुऍ पारें, हों आरो-आरो गुण के कोइयो पुरुषार्थी मनुष्य अपनों लगन सें अर्जित करें पारें, करै छै। यहाँ ई बात उल्लेखनीय छै कि डॉ. अमरेन्द्र के अंगिका प्रबंध काव्य 'गेना' के नायक ही कादर जाति सें आवै छै। महाकवि भास नें अपनों एक नाटक के नायक कर्ण कें ही बनैलें छै आरो रामधारी सिंह दिनकर के काव्य रश्मिरथी के नायक भी कर्ण ही छेकै। होना कें कर्ण अपनों पिता आरो माता के कुल सें उच्च कुलोद्भव ही छै। जे हुऍ, ई गुण नायक के मुख्य गुण केन्हों कें नै हुऍ पारें। अवश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व पर ओकरों वंश के प्रभाव भी पड़ै छै।

अतिरथी में कर्ण केरों व्यक्तित्व कें बताय लें कविं कोय सीधा-सीधा रस्ता नै पकड़ी कें एक अलग रस्ता अपनैलें छै; यहाँ कर्ण के चरित्र पांडव आरो इन्द्र के संवाद सें उजागर होलों छै। प्रथम सर्ग में युद्ध के परिणाम लैकें चिंतित युधिष्ठिर जे कुछ बोलै छै, वैसें कर्ण के चरित्र पर काफी प्रकाश पड़ै छै। कर्ण रों बदन पर जे कवच-कुंडल छै, ओकरों दिव्यता के वर्णन करतें युधिष्ठिर कहै छै :

केन्हों चमकै कवच कुंडलो
सूर्य छाती-कानों में झूलै

तें, अप्रत्यक्ष रूपों सें कविं खाली कवच-कुंडले के दिव्यता रों वर्णन नै करी देलें छै बलुक यहू बताय देलें छै कि कर्ण सूर्यवंश में उत्पन्न वीर तेजस्वी युवक छेकै। नायक रूपवान हुऍ, वहू यहा चार चरण के रुहारा सें कविं पूरा करी देलें छै। यहाँ कवि-प्रतिभा के कौशल देखलों जावें सकै छें।

अतिरथी खंडकाव्य छेकै यै लेली नायक के गुण विस्तार सें वर्णितो नै हुऍ पारें आरो नै सब गुणों के ही—वहू में जे प्रबंध मात्र उनचास बंधों में सिमटलों रहें। ई तें कवि सारस्वत के विलक्षण प्रतिभा ही कहलों जैतै कि कभी ध्वनि में, कभी समास में, कभियो संवाद के बीच सें, तें कभियो अलंकार के माध्यम सें कर्ण के लोकरंजक-तेजस्वी रूप यहाँ खाड़ों करलें छै। युधिष्ठिर के चिंता में तेजस्वी, योद्धा कर्ण के छवि साफ-साफ देखलों जावें सकै छै :

कवच-कुंडले काफी छै बस
ई रण के फल बदलै लेली
हाथी के गोड़ों नीचू में
की टिकतै ई फूल चमेली!

(पृ. १५)

हाथी रों बल सें कर्ण के शूरता के तुलना आरो फूल चमेली सें पांडव के सेना के तुलना, झटकै में कर्ण के शूरता बताय दै वास्तें काफी छै। कर्ण के शूरता तें आरो विलक्षण रूप सें ध्वनि में उजागर होय छै, जबें युधिष्ठिर बोलै छै कि :

कहाँ कृष्ण भी बोलै कुछ छै
कुछ टोकों, तें तभियो मौने!

(पृ. १७)

कर्ण के शूरता तें ओकरों दल के उत्साहे सें प्रकट होय छै जेकरा कविं निम्नांकित चार पंक्ति सें हेना कें उजागर करै छै :

देखै छौ दुश्मन दल केन्हों,
उछली-उछली भाला भाँजै,

तीर, धनुष, तलवार नचावै
भोररिया, दुपहरिया, साँझै

(पृ. १७)

कर्ण के सौंसे चरित्र मुख्य रूप सें ओकरों वीरता आरो दानशीलताहै पर टिकलों होलों छै, जेकरों विशेष चित्रण में कवि सारस्वतो चुकलों नै छै।

काव्य के प्रतिनायक इन्द्र तें साफ-साफ स्वीकारै छै :

एक तें वीर बहुत बलशाली
महा धनुषधर, अतिरथी होने,
ओकरों सम्मुख तें कालो भी
पल भर लागै ठिगने, बौने।

(पृ. २३)

कर्ण तेजस्वी, अतिरथी अद्भुत
केकरौ की बुझथै ऊ मानी
जेहनों महारथी, ऊ होने
धरती पर छै अद्भुत दानी।

(पृ. २४)

इन्द्र जे बात कर्ण के अनुपस्थिति में स्वीकारै छै, वही बात ऊ ओकरों सम्मुखो दोहरावै छै :

अंग देस पर बहुत-बहुत छै
दानी आरो सतकर्मी भी
लेकिन तोरों हेनों के छै
महाप्रतापी संग धर्मी भी!

(पृ. ४२)

है बात नै कि इन्द्र के बारे में कर्ण कें मालूम नै छै, ऊ तें सूर्ये बतैय्ये देलें छै। कर्ण एक क्षण लेली अन्तर्द्वन्द्व में तें पड़वो करै छै पर तुरत्ते अपनों स्वभाव के अनुकूल कवच आरो कुंडल तलवार सें छीली कें दै दै छै, ई कहतें हुए :

ठहरों सुरपति, ठहरों, ठहरों

हमरा नै कोय यश के किंछा,
हमरों एक्के धर्म-दान बस
एक्के हमरों प्रण मनबिच्छा।

(पृ.४७)

आरो कर्ण जेन्है कें देह सें छीली कें कवच आरो कुंडल के दान करै छै कि :

गूंजी उठलै दिशा-दिशा में
कर्ण तोंही नरभूषण, नरपति
शील तोही सौन्दर्य धरा के
तोरों सम्मुख की सुर-संपति!

(पृ. ४६)

है जे दिशा-दिशा से शील-सौन्दर्य के बात उठै छै, एकरों प्रमाण अतिरथी खंडकाव्य में कै जगह मिली जाय छै। एतना पराक्रमी, तेजस्वी, महादानी होला के बादो अहंकार तें कटियो-टा कर्ण में कहीं नै दिखै छै। संयमी तें एतन्है छै कि विप्रभेष में छली इन्द्र कें पहचानला के बादो अपनों संयम कें बनैलें रखै छै आरो जों विनम्रता के उदाहरण देखना रहें, तें काव्य के तेसरों सर्ग के अंतिम छंद के पूर्व चार पंक्ति के देखना ही काफी होतै। सूर्य जबें आवैवाला संकट कें बताय कें निकली जाय छै आरो कर्ण कें ई ज्ञान होय छै कि ऊ व्यक्ति आरो कोय नै, ओकरे पिता छेलै, तें तखिनको कर्ण के रूप द्रष्टव्य छै :

अपने आप झुकी सर गेलै
कर्ण महावीरों कें तत्क्षण
धन्य-धन्य छै हमरों जीवन
बात उठै छै एक्के क्षण-क्षण ।

(पृ. ३६)

ई सचमुच में अचरज के विषय छेकै कि लघु खंडकाव्य के नायक में प्रबंधकार नंदलाल यादव सारस्वत नें केना नायक के ऊ अधिकांश विशेष गुण कें उतारी देलें छै, जेकरा भारतीय काव्यशास्त्री जरूरी मानलें छै। ई सब गुणों सें अलग ई प्रबंध काव्य कें नायक कर्ण में जातीय चेतना के बहाना मातृभूमि के प्रति जे अनुराग दिखैलें छै, ऊ तें कर्ण के

चरित्र कें आरो लोकरंजक बनाय गेलों छै।

के पूछै छै स्वर्ण कवच कें
कुंडल की, सिंहासन तक के,
अंग देस के लोगें देखै
कंकड-रं सुरआसन तक कें।

(पृ. ४३)

अतिरथी काव्य के कर्ण जातीय चेतना के ऊ विकृत रूप सें मुक्त छै, जे अपनों माँटी, अपनों भाषा सें अलग सौंसे देह के प्रति कोय हीन भाव सें ग्रसित रहें । संभव छै, कवि सारस्वत नें कर्ण में ई जातीय चेतना के ई गुण, पाश्चात्य काव्यशास्त्री के ऊ मत सें प्रभावित होय कें उतारलें रहें कि प्रबंध काव्य के नायक में जातीय चेतना के भाव होना जरूरी छै ।

इन्द्र

शायते कोय व्यक्ति ई बातों सें इनकार करतै कि काव्य आकि नाटक में जों प्रतिनायक नै रहें, तें नायक के जे उदात्त चरित्र कवि आकि लेखक गढ़ै लें चाहै छै, ऊ केन्हौ कें संभव हुऍ पारें। नायक लेली प्रतिनायक ही हौ परिस्थिति पैदा करै छै, जेकरा पर विजय पावी कें नायक लोकरंजक धीरोदात्त नायक बनें पारै छै। यै तरह सें प्रतिनायक के महत्व स्वयं सिद्ध छै।

प्रायः हेनों प्रतिनायक वास्तें लेखक वैमें धूर्तता, चालाकी, साहस आरनी विशेषता कें भरै के कोशिश करै छै, जे जरूरीये छै।

अतिरथी खंडकाव्य के इन्द्र भी प्रतिनायक ही छेकै मतुर ई पात्र देवता सिनी के नरेशो छेकै, यै लेली ई पात्र के चरित्र गढ़ै में कवि सारस्वत जी नें काफी सावधानी रखलें छै । ई ठीक छै कि ई कर्ण के कवच-कुंडल विप्रभेष धारण करी दान में लै लै छै आरो ई सब हुऐ छै पुत्र-मोह के कारण। इन्द्र कें कर्ण के बल-पराक्रम मालूम छै, वै पर अमोघ अस्त्र–कवच-कुंडल। वैं कर्ण के दान कें प्रशंसा करै छै; ओकरा लगै छै कि वैं दान में ही ऊ कवच-कुंडल हासिल करें पारें आरो एकरों सरलतम उपाय छेकै–मुनि के रूप धारण करवों। कवि सारस्वत इन्द्र कें एतना अन्तर्द्वन्द्व दिखैला के बादे ओकरा पूजनरत कर्ण के समक्ष उपस्थित करै छै। ई करै के पीछू एक लक्ष्य कवि के यहा हुऍ पारें कि देवराज इन्द्र के प्रति पाठक के घृणा के कम करना आरो एकरा में कवि सफल भी होलों छै।

प्रतिनायक में जॉन कालगत विवेक के जरूरत होय छै ओकरा कवि नें खंडकाव्य अतिरथी के इन्द्र में की कुशलता सें दर्शैनें छै, ऊ तें देखै लायक छै। ओकरा मालूम छै कि कर्ण केन्हौ कें दान के धर्म सें डिगें नै पारें आरो तखनी तें केन्हौ कें नै, जखनी ऊ सूर्यपूजा पर रहें। यही

कारण सूर्यपूजा सें उठलों कर्ण जेन्हैं विप्रभेष में इन्द्र कें देखी पूछै छै :

की कोनो दैहिक बाधा छै
या कोनो दैविक छौं बाधा
या भौतिक, तें जल्दी बोलों
कोंन विपत्ति हो नर-मादा

(पृ.४१)

तें; इन्द्र सीधे कवच-कुंडल के बात नै करी कें कर्ण के प्रण के याद दिलाय छै आरो चेताय भी छै कि जों इच्छित फल माँगला पर नै मिलै छै, तें कर्ण कें भारी अपयश ही मिलतै :

सुनथैं बोली उठलै याजक
याचक छी, माँगै लें ऐलियौं
तोरों भारी अपयश होथौं
जों खाली हाथे ही गेलियौं।

(पृ.४१)

एक पूर्ण समझदार प्रतिनायक नाँखी इन्द्र यहाँ अपयश के भय सें लैकें कर्ण के प्रशंसा तक में नै चुकै छै ताकि कर्ण केन्हौ कें दान-धर्म सें विमुख नै हुऍ :

अंगदेस तें दान-पुण्य के
धरती परकों स्वर्ग छेकै,
कोइयो देव कैन्हें नी होवें
हेकरे दिस बस टुक-टुक ताकै।
वही देश के तोहें दानी
जहाँ मथैले सागर तक भी,
अमृत के जे देश मनोहर
धन्य-धन्य तोरा जे पावी।
अंग देश पर बहुत-बहुत छै
दानी आरो सतकर्मी भी,
लेकिन तोरों हेनों के छै
महाप्रतापी संग धर्मी भी!

(पृ. ४१-४२)

अतिरथी के इन्द्र कें मालूम छै कि ऊ जोन चीजों के माँग कर्ण सें करै लें जाय रहलों छै, वैं कर्ण कें प्रणपथ सें डिगावौ पारें, जे कि अतिरथी में देखलों जावें पारे। कर्ण एक दाफी तें अन्तर्द्वन्द्व में अवश्य पड़ी जाय छै। ओकरा पिता सूर्य के चेतावनी भुलाय कें ही दुख नै होय छै अपनों लक्ष्य में चुकै के बात सोची कें ऊ बोलै छै कि कवच-कुंडल के बदला :

माँगो एक देश की सौ-सौ
ऊ भी जीती तोहरा देभौं
एक स्वर्ग की सौ स्वर्गो कें
बोलों दिन भर में लै ऐभौं।
नै एकरा सें तोष अगर छौं
हमरों प्राण समेटी लै ला
लेकिन माँगों कवच नै कुण्डल
तोरों लें तें एक अधेला ।
हमरा लें संकल्प मनोरथ
हमरा लें सिद्धि जीवन के
विप्र बनी कें जों ऐलों छों
जीभ नै काटों तों गोधन के।

(पृ.४५-४६)

इन्द्र कर्ण के कमजोर पड़तें मन कें भाँपी लै छै, तें तुरत दोसरों चाल चली दै छै :

कोय बात नै लौटी जाय छी
हम्में सुरपति तहियो याचक
लेकिन तोरों दान-धर्म के
कल की होथौं ? बोलों वाचक!

(पृ.४६)

आरो फेनु हेनों कर्म लें अपना कें पतित सिद्ध करतें दार्शनिक के मुद्रा में नीति आ आदर्श के बातो करें लगै छै :

लोभ अगर जों ओछों हुएँ तें
यश ओकरा सें कहिया मिललै,

भले कल्प के गाछ रहें ऊ
फूलों बदला काँटे खिलतै।

(पृ.४६)

इन्द्र के वाक् चातुर्य इन्द्र के लक्ष्य कें आसान बनाय दै छै आरो अपनों अन्तर्द्वन्द्व हटाय कें कर्ण बोली पड़ै छै :

ठहरों सुरपति, ठहरों-ठहरों
हमरा नै कोय यश के किंछा
हमरों एक्के धर्म-दान बस
एक्के हमरों प्रण मनबिच्छा।

(पृ.४७)

कोय शक नै कि अतिरथी के इन्द्र के ज्ञान, वाक्-चातुर्य, छल-कपट सब कुछ मिली कें ओकरा एक मंजलों प्रतिनायक के रूप प्रदान करै छै, तभियो कवच-कुंडल प्राप्त करला के बाद ओकरों कर्ण लें कथन—केन्हौ-नें-केन्हौ यहू सिद्ध करै छै कि अतिरथी के इन्द्र मात्र प्रतिनायक नै, ओकरों में सत्य आरो भविष्य कें देखै के प्रज्ञा भी छै आरो यही बात ओकरा आस्वादक के घृणा के शिकार होय छै बचाय लै छै। अपकर्म के पापबोध आरो ग्लानि सें भरलों इन्द्र :

भारी मन से आखिर बोललै
हे अंगदेश के अंगराज,
तोरों दानों पर तें अर्पित
छै कुरुक्षेत्र के विपुल ताज।

(पृ.५०)

स्पष्ट छै कि अतिरथी खंडकाव्य के प्रतिनायक इन्द्र खाली प्रतिनायके नै छै, जेकरा में प्रचंडता, क्रूरता, घमंड, आत्मप्रशंसा के भाव ही भरलों रहें, रूप-परिवर्तन कारणें ई मायावी जरूरे लगै छै, मतुर हेनों मायावी नै छेकै, जेकरों छल खुलै नै पारें । ई सब शठता सें अलग एकरा में हेनों व्यक्तित्वो छै, जे प्रबंधकाव्य के नायक के सघनता सें होय छै। जों ई कहलों जाय कि कवि नंदलाल यादव सारस्वत के इन्द्र एक नया किस्म के प्रतिनायक छेकै, जेकरा में नायक आरो प्रतिनायक के आत्मा जुड़ी गेलों छै, तें गलत नै होतै।

अतिरथी में आधुनिकता

अतिरथी के कथावस्तु भले अतीत के स्मृतिकलश रहें मतुर ऊ वर्त्तमान के भी रिपोतार्ज छेकै, शायत वर्तमान के ही चित्र उकेरै लें प्रबंधकार नें पुराकाल के इतिहास उठाय लानलें छै—जों कोय हेनों कहै छै, तें बिलकुल सहिये छै । कवि नें अतीत के साँस-नली में आधुनिकता रों फूँक मारी कें भविष्य लें कुछ आशा आरो विश्वास के धड़कन पैदा करलें छै, यैमें कोय शक नै।

हेनों तें हुवै नै पारें कि कोय कवि रचनाक्रम में अपनों युग के यथार्थ सें अलग-थलग बनलों रहें, ऊ चाहे प्रेमकाव्य ही कैन्हें नी रहें, आधुनिकता यानी युगीन चेतना तें कोय-न-कोय रूपों में धड़कतें रहै छै—मतर जे रचनाकार अपनों देश-काल के प्रति बेसी सजग रहै छै, ओकरों रचना में युगीन चेतना बेसी प्रखरता के साथ उजागर होय छै। हेनों कवि के कृत्ति में घटना, पात्र यहाँ तांय कि भाषाओ पर आधुनिकता के प्रभाव कें साफ-साफ पहचानलों-पकड़लों जावें सकें छें।

आधुनिकता के लैकें हम्में यहाँ बहस में नै पड़ें लें चाहै छी, कैन्हें कि जे दमित कामवासना कें अपनों रचना में रूप दै रहलों छै, वहूं आधुनिक होय के दावा करें पारें, करै छै आरो जे मार्क्सवादी विचारधारा सें सीधे-सीधे जुड़लों छै, ऊ तें आरो अपने के बेसी आधुनिक बतावें पारें। हम्में नंदलाल यादव सारस्वत के प्रबंध काव्य में जबें युगीन बोध आकि आधुनिकता के बात करै छियै, तें हमरों इशारा प्रबंधकार के ऊ युगीन चेतना सें छै, जेकरों कारण ई छोटों-सन खंडकाव्य में वर्त्तमान के राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ बहुत साफ-साफ ठाढ़ों हुएँ पारलों छै।

मतुर राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ पर बात करै के पहले प्रबंधकार कें ऊ दृष्टियो पर ध्यान देना जरूरी छै, जेकरों कारण कवि महाभारत के एक हेनों पात्र कें उठाय छै, जे सब किसिम सें समरथ होथों

यै लेली भीष्म आकि द्रोण सें अपमानित होय जाय छै कि ऊ सारथीपुत्र छेकै आरो इतिहास सें अपमानित वही पात्र कें कविवर सारस्वत जी अपनों प्रबंध के जबें नायक बनाय छै, तें आधुनिकता यही सें उजागर होय चलै छै । प्रबंधकाव्य के नायक के संबंध में भारतीय काव्यमनीषी के यहा मान्यता रहलों छै कि प्रबंध के नायक कें सर्वगुण सें संपन्ने नै बलुक उच्च कुल सें ओकरों होना जरूरी छै आरो प्रबंधकार सारस्वत जी हेनों नै करी कें महाभारत के ऊ पात्र कें अपनों काव्य के नायक बनाय छै, जे उच्च कुल सें होला के बादो दलित छै। नायक के ई चुनाव ऊ आधुनिक विचारधाराहै सें प्रेरित-प्रभावित छै जेकरों अनुसार समाज में जाति या वर्ण के आधार पर मनुष्य के अपमान मानवीय मूल्य के एकदम विरुद्ध छै। कविवर रामधारी सिंह दिनकर नें भी यही आधुनिकता कें स्वीकार करतें रश्मिरथी कें आरंभे में कहलें छै :

सुधी खोजतें नहीं गुणों के आदिशक्ति के मूल।

खाली प्रबंध के नायक-चुनाव में ही सारस्वत जी अपनों युगीन चेतना के परिचय नै दै छै बलुक अतिरथी में आयकों राजनीति के जे कलुषित चेहरा के अंकन महाभारत-कथा के आड़ में उजागर करनें छै, ऊ तें ई प्रबंध काव्य कें आरो आधुनिक बनाय छै।

यहाँ एक बात आरो विचारणीय छै कि अतिरथी में जे सामाजिक-धार्मिक विसंगति के यथार्थ उभरलों छै, ऊ इतिहास के वही पात्र सें उभरै छै, जे स्वयं ऊ विसंगति के शिकार छै। एकरा सें विचार आकि यथार्थ के प्रामाणिकता बेसी बढ़ी गेलों छै आरो यहा कारण छेकै कि अतिरथी में जाति-वंश के नाम पर प्रताड़ित कर्ण जबें अपने आप में सोचै छै :

हमरों कुल कें नीच कहै छै
हमरों मन कें हीन बतावै
ओकरे लें तें समय युद्ध ई
ओकरा बचना मुश्किल आबें।
अबकी निर्णय होय कें रहतै—
वंश बड़ों या शील शौर्य छै ?

(पृ. ३०)

तें नया सामाजिक चेतना यहाँ कत्तें मुखर होय गेलों छै, ई कहै के जरूरते नै रही जाय छै । आय पीड़ित वर्ग में जे उबाल पैलों जाय रहलों छै आरो जेकरा प्रगतिशील विचारधारा के लेखक वर्ग-संघर्ष के रूपों में देखै छै, ओकरा कवि सारस्वत कर्ण के सहारा लैकें केना कें व्यंजित करलें छै, ई तें देखै लायक छै।

सबसें बड़ों बात तें ई छेकै कि आय भ्रष्ट सामाजिक आचार के पोषक साथें धर्माचारी भी साथ होय गेलों छै। यही कारण छै कि अतिरथी में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक अत्याचार के गठजोड़ कें यथार्थ कर्ण के स्वगत में उभरी आवै छै :

भगवानों के आड़ लै करी
करै कोय अन्याय अगोचर
की रं हाँफै छै अधर्म ठो
की रं छै अन्याय प्रसन्नों
छल के छाया, अनाचार के
देखौं हम्में जन्नें जाय छी।

(पृ. ३०-३१)

आगु सारस्वत जी सामाजिक सौन्दर्य के रक्षककवि-रं, ई वैज्ञानिक मान्यता कें अपनों ढंग सें रखै छै कि धर्म अफीम छेकै जेकरों उपयोग शोषक अपनों हित में करै छै। कवि के निम्नांकित पंक्ति सिनी उपरोक्त आधुनिक विचार के कत्तें नगीच छै, ई देखै लायक छै :

विधियो ठो अन्याये के संग
जरियों सोच-विचार कहाँ छै
पुण्य कर्म के सम्मुख पापी
तनियो टा लाचार कहाँ छै।

(पृ. ३१)

अतिरथी में आधुनिकता पर विचार करतें समय हमरा ई केन्हौ कें नै भूलना चाही कि ई काव्य खंडकाव्य छेकै, महाकाव्य नै । खंडकाव्य में प्रबंधकार के दृष्टि मुख्य रूप सें कोय खंड कथाहै पर टिकलों रहै छै; विचार यैमें दू-एक फुलैलों फूल नाँखी होय छै—वहू में अतिरथी कोय विचार प्रधान प्रबंध नै छेकै; ई आख्यानक खंडकाव्य छेकै, यै लेली नै

विचार, नै कालदेश के होनों यथार्थ वर्णन यहाँ संभव छेलै, ओकरों बादो युगीन प्रभाव तें ई खंडकाव्य पर भिन्न-भिन्न स्तर पर देखले जावें पारें छें। प्रबंध में एक हेने युगीन चेतना प्रबंध कें भाषा शैली सें भी समझलों जावें सकै छै कि प्रबंधकार घटना आकि विचार के अभिव्यक्ति लें हेने भाषाशैली कें स्वीकार करलें छै, जे सामाजिक भाषा सें बहुत दूर नै पड़ी जाय। भाषा में कोय चमत्कारिक सौन्दर्य लानै के कोशिश कवि द्वारा यहाँ नै होलों छै । ई काव्य के जे भाषा छै, ऊ यथार्थ कें समझै लेली आम जन के भाषा अधिक छेकै आरो वस्तुवादी काव्यभाषा-सौन्दर्य कें बहुत निकट कें भाषा :

जेकरों लें सिंहासन सब कुछ
नर-नरता कें तुच्छ बुझै छै
रातों के बस ओकरे फोटू
पुण्य कर्म के पाप बुझै छै।
गद्दी लें केकरों गर्दन कें
कभी उतारी लै जे पापी
सिंहासन पर दौड़ी बैठै
मानवता के ठोठों चाँपी।

(पृ. ५४)

अतिरथी में सौन्दर्य-साधना

काव्य में काव्यदोष के अभाव होवों ही काव्य-सौन्दर्य के उपस्थिति छैकै आरो सौन्दर्य के आधार छेकै काव्य केरों गुण । काव्य के गुण की छेकै? ई छेकै—काव्य के विषय रों अनुकूल भाषा-विन्यास। तें, यहाँ स्वाभाविक रूप सें प्रश्न उठी जाय छै कि आखिर अतिरथी के विषय की छेकै आरो ऊ हिसाबो सें यैमें कोंन रसों के परिपाक होलों छै । कोय शक नै कि अतिरथी वीर रस के काव्य छेकै। मतुर ई युद्ध वीर योद्धा के काव्य नै होयकें, दानवीर के काव्य छेकै, यै लेली ई खंडकाव्य में युद्ध के कारण वीररस के निष्पत्ति नै खोजलों जावें सकें। यैठां ई बताय देना जरूरी होतै कि वीर चार किसिम के होय है-युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर, दयावीर आरो यही आधारों पर वीररसो चार किसिम के बनें पारें।

अतिरथी के नायक कर्ण युद्धवीर नै छेकै, यै लेली नै युद्ध के दृश्य छै, नै योद्धा के अनुभाव यहाँ छै। अतिरथी के कर्ण दानवीर कर्ण छेकै, धर्मवीर कर्ण छेकै। यहाँ उद्दीपन के रूप में इन्द्र छै जेकरे कारण कर्ण के मनों में शंका-निराशा हेनों संचारी क्षणिक भावों के जन्मो होय छै, फेनु आखिर में संचारी भाव झुकत्हैं कर्ण के धर्म, दानशीलता के उदात्त रूप जागृत होय छै आरो ऊ तलवार सें अपनों देह के कवच-कुंडल निकाली कें विप्रभेषधारी इन्द्र कें दै दै छै। मतर यहू बात सही छै कि कवि सारस्वत जी नें कर्ण कें युद्धवीर रूपों के उपेक्षो नै करलें छै। भले कुछ छंद में ही सही; युधिष्ठिर के चिंता के सहारा युद्धवीर कर्ण के जे रूप कविं अंकित करलें छै आरो जे किसिम सें स्थाई भाव, उत्साह, विभाव, उद्दीपन, संचारी भाव के चित्र उभरी ऐलों छै, ऊ काव्य में सौन्दर्य के एक प्रमुख स्थल छेकै। कुछ छंद द्रष्टव्य छै :

पांडव सेना में उथल-पुथल
युद्धों में मुश्किल लगै जीत,

जब तक कर्णो के पास कवच
कुंडल के अद्भुत सैन्यमीत।
कवच-कुंडले काफी छै बस
ई रण के फल बदलै लेली
हाथी के गोड़ोॅ नीचू में
की टिकतै ई फूल चमेली!

(पृ. १५)

हम्में की, तीनो लोकों तक
शक्ति कैन्हें नी सब झोकी दें,
कुंडल-कवच के ऊ ताकत छै
जे कालों के गति रोकी दें।

(पृ.१७)

देखै छौ दुश्मन-दल केन्हों
उछली-उछली भाला फेंकै,
तीर-धनुष, तलवार नचावै
भोररिया दुपहरिया लागै।

(पृ. १७)

यैठां वीररस के आलंबन, उद्दीपन आरो संचारी भाव साथे भयानक रस कें स्थायी भाव भय साथे अन्य भावों के चित्रण संक्षिप्त होतें हुए भी भयानक आरो वीर रस अपने आप में कत्तें प्रभावी बनी गेलों छै, ई बतावै के जरूरत नै छै।

आरो यहू बतावै के जरुरत नै छै कि दानवीर-धर्मवीर कर्ण के ओज कें दर्शावै लेली प्रबंधकार नंदलाल यादव सारस्वत नें काव्य के जोंन प्रसाद आरो माधुर्य गुण सें संपन्न समासहीन वैदर्भी काव्यभाषा सार्थे, वैदर्भी-गौड़युक्त पांचाली रीति के भाषा-सौष्ठव प्रस्तुत करलें छै, ऊ कत्तें सुन्दर छै आरो जेकरा सें तें अतिरथी के भाषा में भारी कलात्मकता आवी गेलों छै। माधुर्य आरो प्रसाद गुण के कारण ही पाठ के समय सहृदय यहाँ कवि-वचन के अर्थ कें आसानी सें ग्रहण करतें हुएँ द्रवित होय जाय छै।

यहाँ तांय कि जहाँ-जहाँ कवि नें भाषा के सौन्दर्य लेली अलंकार के सहारो लेलें छै, वहूँ कवि के एक्के लक्ष्य रहलों छै—काव्यार्थ कें केना

ठीक-ठीक सहृदय तांय पहुँचैलों जावें सकें। एक-दू उदाहरण दुष्टव्य छै :
केन्हों चमकै कवच कुंडलो
सूर्य छाती कानों में झूलै,
आकि कोनों स्वर्ण कमलदल
काया-मानसरोवर फूलै।

(पृ. १७)

लगलै जेना गहन रात में
भोर हठाते किरिन बिखैरै
कानी के सुतलो बुतरू पर
माय ममता के ऊँगली फेरै।

(पृ. २०)

पूरे अतिरथी के भाषा में नै तें श्रुतिकटुत्व के दोष छै, नै असमर्थत्व के आरो नै निरर्थक शब्द-प्रयोग, नै तें क्लिष्टत्व के दोष छै, आरो नै तें हतवृत्तत्व के। वृत छंद पर तें कवि के अद्भुत पकड़ छै। आरो एक बात कि कवि सारस्वत नें आधुनिकता के मोह में कोय हेनों बात नै करलें छै कि अतिरथी काव्य दुष्क्रमत्व के शिकार होय गेलों रहें। जे कुछ नया छै, ऊ प्रसिद्धि के प्रकाश में ही छै।

अतिरथी के पाँचमों सर्ग

अतिरथी के पाठक आकि आलोचक के मनों में एक प्रश्न स्वाभाविक रूप सें उठें पारै छै कि जबें आलोच्य खंडकाव्य के कथावस्तु काव्य कें चौथे सर्ग में समाप्त होय जाय छै, तें यहाँ पाँचमों सर्ग कें जोड़ै के की जरूरत छेलै ?

तें, ई प्रश्न के यहें उत्तर हुएँ पारें कि कोइयो रचना के सृजन के पीछू रचनाकार के कोय-नें-कोय विशिष्ट लक्ष्य जरुरे होय छै, जेकरा वैं कोय-नें-कोय पात्र आकि प्रसंग के सहारा जरूरे व्यक्त करतें रहै छै। चौथों सर्ग में इन्द्र के कथन सें ई बात कें समझलों जावें सकै छै। छल सें कवच-कुंडल प्राप्त करला के बाद इन्द्र सत्य कें स्वीकारतें बोली उठै छैः

लोभ अगर जों ओछों हुएँ तें
यश ओकरा सें कहिया मिलतै,
भले कल्प के गाछ रहें ऊ
फूलों बदला काँटे मिलतै।

(पृष्ठ ४६)

मतुर अतिरथीकार जे मानवीय मूल्य के खुली कें वकालत करै लें चाहै छै, ऊ इन्द्र आकि कोइयो प्रसंग सें केन्हौ कें संभव नै छेलै। एक तें जों हेनों होतियै, तें पहिलों बात यहा होतियै कि ऊ शिल्प के दृष्टि सें आलोचना के शिकार होतियै, फेनु आरो कुछु-कुछु।

आरो जों खंडकाव्यकार नंदलाल यादव सारस्वत के उद्देश्य कवचकुंडल-दान के कथा कें चौपाई आकि चौपई छंद में कहनाहै होतियै, तबें तें पाँचवों सर्ग के आयोजन के जरूरते नै पड़तियै, मतर जबें ई काव्य सें वर्तमान कें कुछ विशिष्ट संदेश दै के लक्ष्य रचनाकार के समक्ष रहें, तें काव्य में कुछ आरो छंद जोड़ै के जरूरतो छेवे करलै। पाँचवों सर्ग के

अध्ययन सें ई बात कें साफ-साफ समझलों जावें सकै छै कि यहाँ कोय कथा नै छै आरो नै अतिरथी काव्य के कोय पात्रे। जों छै, तें बस यही कि प्रबंधकाव्यकार रंगमंच पर उतरी कें सीधे-सीधे सहृदय सें ऊ सब कहै छै, जे काव्य में खुलीकें कभियो नै आवें पारलै आरो जे संदेश ही प्रजातांत्रिक मूल्य के वकालत करतें ई काव्य कें भी प्रासंगिक बनाय छै। आखिर ई खंडकाव्य कें यही कहै लें तें कवि सारस्वत जी नें रचलें छैः

'दुसरै लें जे जीयै, मरै छै
दुसरे लें जेकरों छै जीवन
वही धरा के देव कहाबै
ओकरे जीवन सफलो पावन ।
वही गढ़ै इतिहास नया कें
वही भावी कें रस्तो दै छै
ओकरै सें सम्मानित देशो
ओकरै युग-युग कल्पें पूछै ।
जे सिंहासन लें ही सोचै
ओकरै लें छल-छद्म करै छै
एक्के बार मरै के बदला
दिन में ही सौ बार मरै छै ।
जेकरा लें सिंहासन सब कुछ
नर-नरता कें तुच्छ बुझै छै
रातों में बस ओकरे फोटू
पुण्य कर्म कें पाप बुझै छै ।
गद्दी लें केकरो गर्दन कें
कभी उतारी लै जे पापी
सिंहासन पर दौड़ी बैठै
मानवता के ठोठों चाँपी।

(पृ. ५४)

अतिरथी के पाँचवों सर्ग के कुल बीस छंदों में कवि के यहा संदेश पनरों छंद तांय फैललों होलों छै। बाकी पाँच छंदों में काव्यकार नें कर्ण के अमरता के बात करलें छै, ऊ कर्ण कें जे सब लोगो के लाज

के रक्षक छेकै :

अतिरथी कर्ण कभी की मरतै
कालों के माथा पर चढ़ी कें
ऊ ते जीत्तो रहतै कल्यो
नियति आरो भागों सें बढ़ीकें
आय कीर्ति छै भले मलिन रं
कलकों युद्ध-समर पुरला पर
अंग, अंग के कर्ण-कथा सब
घुरतै नया समय घुरला पर ।'
ओकरे यश सें यशपति होतै
सौंसे लोक, धरा, पातालो
आय भले विपरीत काल छै
कल अनुकूल ही रहतै कालो ।
कलकों छै इतिहास अंग के
अंगराज अतिरथी कर्णों के
कल उत्सव जन्मों के होतै
भले मनाबों कोय मरनों के ।
धन्य अंग तों अंगराज के
खुला नीड़ रं गरुड़-बाज के
रक्षक सब लोगों के लाज कें
धन्य अंग तो अंगराज के। (पृ.५६)

अतिरथी के पाँचवों सर्ग के आखरी पाँच छंद देखै में तें यहें लगै छै कि ई खंडकाव्य के नायक कर्ण के प्रशंसा में ही रचलों गेलों छंद छेकै मतर हमरा भूलना नै चाही कि अंतिम सर्ग कें ई पाँच छंद कर्ण के पीछू ऊ चरित्रवान राजनायको के प्रशंसा छुपलों होलों छै, जेकरों चरित्र कर्ण नाँखी उदात्त छै आरो हेनों चरित्र के सूर्य कें कुछ काल लेली असत्य के अन्धकार जरूर ढँकी लिएँ पारें, मतुर ई स्थिति ज्यादा समय लेली नै रहें पारें। सत्य रों प्रकाश फैलतै आरो ऊ यश सें ई लोको यशपति होतै। खाली ई लोके नै पातालों तांय :

ओकरे यश सें यशपति होतै
सौंसे लोक धरा पातालों
आय भले विपरीत काल छै
कल अनुकूल ही रहतै कालो।

(पृ. ५६)

छंद के निचलका दू चरण में वर्त्तमान के कै किसिम के समकालीन संकट दिस जों इशारा छै, तें कवि के ई आत्मविश्वास भी उजागर छै कि है स्थिति हमेशे लेली नै रहें पारें!

एतना विवेचन के बाद ई बात तें प्रत्यक्ष होइये जाय छै कि भले अतिरथी के पाँचवों सर्ग के आखरी पाँच छंदों में कर्ण के बात उठाय कें कविं ई सर्ग कें भी मूल कथा सें जोड़ी देलें रहें आरो ई जरूरियो छेलै, नै तें काव्य शिल्पदोष के शिकार होय जैतियै, तहियों ई सर्ग मुख्य रूप सें कवि के ही ऊ संदेश-सर्ग छेकै जेकरा अतिरथी के पहिलकों चार सर्ग में कहै के नै तें अवकाश छेलै आरो नै तें औचित्य के दृष्टि सें कलात्मके। अतिरथी के पाँचवो सर्ग काव्य के काया में ही संदेश के महाप्राण-सर्ग छेकै।

काव्य रौं शीर्षक 'अतिरथी' के औचित्य

संरचना आरो शिल्प के दृष्टि सें जबें कोय कृति पर विचार होय छै, तें सबसें पहलें आलोचक के ध्यान शीर्षके पर जाय छै। ई बताय के जरूरत नै छै कि कोइयो कृति के शीर्षक ओकरों ऊ सुराखनुमा रौशनदान होय छै जेकरासें कृति के भीतरी संरचना के भी आभास पाठक आकि आस्वादक कें मिली जाय छै। जहाँ तक कृत्ति के शीर्षक यानी नामकरण के प्रश्न छै, तें सामान्यतः रचनाकार या तें घटना या फेनु घटनास्थल के नामे पर कृत्ति के नाम रखी दै छै। जेना व्यासकृत 'महाभारत', रामधारी सिंह दिनकर के 'कुरुक्षेत्र', मैथिली शरण गुप्त के 'पंचवटी', घटनास्थले के नामे पर शीर्षक जबें कि नायक के नामों पर रखलों शीर्षक के उदाहरण छेकै—डॉ. तेज नारायण कुशवाहा के 'सवर्णा', महाकवि सुमन सूरो के 'उर्ध्वरेता', जगदीश पाठक मधुकर के 'मंथरा', हीरा प्रसाद हरेन्द्र के 'राधा', जगप्रिय के 'रोमपाद', डॉ. आभा पूर्वे के 'मंदोदरी' मतुर बेसी यहा देखलों जाय छै कि कृतिकारें रचना के नायक के नामे पर कृति के नामो रखी दै छै, जे हम्में नंदलाल यादव सारस्वत के आलोच्य कृति अतिरथी में भी देखें छियै।

मतर यहाँ भी सारस्वत जी नें कुछ नवीनता के अवश्य परिचय देलें छै। जों आरो कवि रं ई कवि के नायक के नामे पर शीर्षक रखना होतियै, तें ई प्रबंध के नाम होतियै—कर्ण, राधेय आरनी मतुर यहाँ प्रबंधकार नें ई नाम दै के जग्घा में एक हेनों शीर्षक के चुनाव करलें छै, जे योद्धा के पद सें जुड़लों छै। ई नाम सें सीधे-सीधे कर्ण के बारे में नै जानलों जावें सकें। काव्य के भीतर रमण करला के बादे शीर्षक अपनों अर्थ खोलना शुरू करै छै। तहियो रहस्य-शंका के उपस्थिति बनले रही जाय छै। औत्सुक्य समाप्त नै होय छै। शायत ई औत्सुक्य सम्पूर्ण प्रबंध के अध्ययन मनन के बादे ध्वनि रूपों मे सहृदय यानी आस्वादक के मनों

में गूंजी उठै छै।

शीर्षक कें लैकें रहस्य-उत्सुकता के बात यै लेली कि प्रबंधकार आखिर कर्ण कें कर्ण आकि अर्द्धरथी नै कही कें अतिरथी कैन्हें कहलें छै। पाठक यहैं सें विचार-मंथन सें बंधी जाय छै। महाभारत में एक प्रश्न के उत्तर में भीष्म पितामह बोलै छै कि योद्धा तीन किसिम के होय छै—रथी, अतिरथी आरो महारथी। एकरों आगू आरो स्पष्ट करलों गेलों छै कि रथी ऊ छेकै, जे रथ पर सवार होय के ५००० पैदल सैनिक कें कुशलता सें मुकाबला करें सकें आरो अतिरथी ऊ छेकै जे रकम-रकम के अस्त्र सिनी सें सुसज्जित आरो व्यूहरचना-भेदन में सक्षम बारह रथी योद्धा सें एक्के साथ मुकाबला करै में समर्थ छै; जबकि महारथी किसिम-किसिम के शस्त्र सें सुसज्जित, व्यूह-भेदन में सक्षम ऊ योद्धा छेकै, जे एक्के साथ बारह अतिरथी योद्धा के सेना के मुकाबला ललकारतें, हुँकार भरतें करें सकें। हेना कें तें धार्मिक ग्रंथ में अति महारथी आरो महा महारथी योद्धो के उल्लेख होलों छै मतर यहाँ महाभारत में ऐलों योद्धा पद पर ही विचारना काफी छै।

यहाँ यहू बताय देना जरूरी होतै कि ऊपर वर्णित योद्धा-भेद सें अलग एक आरो योद्धा पद के उल्लेख ऐलों छै—ऊ छेकै अर्धरथी। भीष्म नें कर्ण कें अर्द्धरथी ही कहलें छै आरो नंदलाल यादव सारस्वत अर्द्धरथी सें अलग कर्ण कें अतिरथी कहै थै। जे काम कभी रामधारी सिंह दिनकर जी नें योद्धा आरो दानवीर कर्ण लेली रश्मिरथी संज्ञा गढी कें राधेय कें महारथी के करीब पहुँचाय के काम करलें छेलै, वही काम यहाँ सारस्वत जी भी करै छै।

की ई सोचै लें विवश नै करै छै कि जे रश्मि-रथ के रथी छेकै ऊ अर्द्धरथी केना हुऍ पारें ? ऊ तें महा महारथी ही हुऍ पारें। दिनकर जी कें रश्मिरथी के संकेतार्थ तें ध्वनि में यहा छेकै। यहा सत्य सारस्वत जीं अतिरथी के माध्यम सें व्यक्त करनें छै। तें, सवाल यहू उठै छै कि भीष्म हेनों विद्वान आरों विशिष्ट विद्या के ज्ञाता नें कर्ण लेली अर्द्धरथी शब्द के प्रयोग कैन्हें करलकै, तें एकरों मतलब साफ छै कि सिर्फ कर्ण के मनोबल गिराय वास्तें। युद्धभूमि में शल्य भी यहा काम करै छै। ई तें कृष्ण कें भी मालूम छै कि कर्ण जबें युद्ध के संचालन करतै, तें पांडव-सेना में

घबड़ाहट होना स्वाभाविक छै। कर्ण जेन्हैं शंखनाद करतै, तें ऊ आवाज सुनी कें कौरव के बल आरो साहस समुद्र नाँखीं उमड़ी ऐतै, यै लेली कृष्ण पांडव सें कहै छै कि जेन्है कर्ण के शंखनाद हुएँ, तें पांडव दिसों सें आरो जोरों सें ढेरे शंखनाद हुएँ ताकि कर्ण के शंखनाद सुनैये नै पड़ें। तें, सब दिसों सें घेरै के कूटनीति में ही भीष्म नें कर्ण कें अर्द्धरथी कहलें रहै, तें की आचरज!

अर्द्धरथी कहै के पीछू यहू तर्क देलों जाय छै कि कर्ण दू दाफी शापित होलै, छोटों योद्धा सें हारवो करलै; तें यहाँ ई कैन्हें भुलैलों जाय छै कि द्रोण के श्रेष्ठ शिष्य अर्जुन भी महाभारत कें युद्धभूमि में कै दाफी पराजित होलै। आखिर कृष्ण कें सुदर्शन चक्र कैन्हें उठाय लें पड़लै? तें, ऊपरका तर्क के कोय मानै नै छै । असल में भीतरिया बात यहा होतै कि कर्ण कें अर्द्धरथी आरनी कही कें केन्हौ कें ओकरों मनोबल कें गिरैलों जाय। ई सत्य कें समझते हुएँ ही प्रबंधकार नंदलाल यादव सारस्वत नें अपनों प्रबंध-काव्य के नाम आरो कुछ नै रखी कें अतिरथी रखलें छै।

ई प्रबंध काव्य के प्रतिनायक इन्द्र के ई कथन सें भी स्पष्ट छैः

हे अंग देश के अंगराज
तोरों दानों पर तें अर्पित
छै कुरुक्षेत्र के विपुल ताज!

(पृ.५०)

परम दानी, परम वीर के व्यक्तित्व पर जों कुरुक्षेत्र के विपुल ताज अर्पित छै, तें आचरजे की; तभिये तें कवि के चेतना अतिरथी के समर्थन में बोली उठै छै :

अतिरथी कर्ण कभी की मरतै
कालो कें माथा पर चढ़ी कें
ऊ तें जित्तों रहतै कल्पों
नियति आरो भाग्यो सें बढ़ी कें।

(पृ.५६)

इन्द्र आरो कवि-वचन साथें तथ्य के आलोक में ई प्रबंध काव्य कें शीर्षक अतिरथी निसंदेह उचित आरो कलापूर्ण भी छै, जे कविविवेक, ओकरों सारस्वत प्रतिभाओं के प्रमाण छेकै।

अतिरथी : संरचना आरो शैली

अतिरथी खंडकाव्य छेकै आरो खंडकाव्य की छेकै ? ई महाकाव्य से केना कें अलग छै ? एकरा पर लंबा बहस करना बेकार होतै, कैन्हें कि भारतीय काव्यशास्त्री सिनी महाकाव्य पर तें विस्तार सें विचार करलें छै मतुर खंडकाव्य के नामों पर हुनकासिनी लगभग चुप्पिये साधलें रहलै। हाँ आधुनिक काल में आवी कें जबें प्रबंध काव्य के नया-नया रूप आवें लगलै, तबें खंडकाव्य कें भी परिभाषित करलों गेलै मतर वहू बहुत विस्तार सें नै, बस कुछ पंक्ति में परिभाषित करै के कोशिश भर होलै जेकरों अनुसार खंडकाव्य प्रबंधकाव्य के ऊ रूप छेकै जेकरा में महाकाव्य हेनों संपूर्ण कथा के विस्तार नै होय कें, कथा के कोय एक खास अंश कें वर्णन के विषय बनैलों जाय छै। मतर एकरा सें है नै समझना चाही कि ई खंडकथा अपना आप में अधूरा होय छै। ई भले कोय विस्तृत कथा के एक अंश होय छै मतर होय छै यहू अपना-आप में पूर्ण। प्रबंधात्मक खंड काव्य के रूप कें समझै लेली महाकाव्य के आलोक में यै पर विचारना जरूरी होतै।

खंडकथा के विषय

महाकाव्य में नायक के सम्पूर्ण जीवन के आख्यान रहै छै, यही सें एकरों कथानक में काफी विस्तार रहै छै आरो चूँकि खंडकाव्य खंडकथा के काव्य छेकै, यैसें ई प्रबंध-रूप में कोय एक प्रमुख घटना कें वर्णन कें विषय बनैलों जाय छै, जे रं अतिरथी काव्य में एक विशेष घटना, कर्ण द्वारा इंद्र कें कवच-कुंडल-दान कें। चूँकि खंडकाव्य में कोय खास प्रसंग कें ही वर्णन के विषय बनैलों जाय छै यही सें हेनों प्रबंध कें लघुकाय के होना स्वाभाविके छै। मैथिलीशरण गुप्त के पंचवटी काव्य

नाँखी नंदलाल यादव सारस्वत कें अतिरथी काव्य सें ई बात कें भली भाँति समझलों जावें सकै छै। अतिरथी में नै तें कथा के विस्तार छै आरो नै तें देशकाल के विस्तृत उल्लेख । जहाँ देशकाल के वर्णन छै, वहाँ कवि सुक्तिशैली के सहारा लेतें ध्वनि में जे कहना होय छै, कही जाय छै ।

वर्णन-पद्धति

खंडकाव्य अपनों वर्णन-शैली कें लैकें दू प्रकार के हुएँ पारें । जहाँ कथा के ही प्रमुखता देलों जाय छै, वहाँ इतिवृत्तात्मकता बेसी होय छै, मतुर जहाँ भाव के प्रधानता होय छै, वहाँ काव्य में रसात्मकता बेसी होय छै । कवि सारस्वत जी नें अतिरथी खंडकाव्य में घटना कें प्रमुखता नै देलें छै, यहाँ अन्तर्द्वन्द्व के प्रधानता छै; घटना नेपथ्य में जेना आवी गेलों रहें आरो कवि के विचार कुछ अधिक प्रखर होय गेलों छै, एक बात आरो कि ई खंडकाव्य वर्णात्मक शैली में नै, कवि नें एकरा नाटकीय रूप दै कें एकरों रसात्मकता कें आरो बढ़ाय देलें छै । संवाद के योजना वर्णानात्मकता के नीरसता कें तोड़ी रखलें छै ।

सर्गबद्धता

प्रायः देखलों जाय छै कि जे घटनाप्रधान खंडकाव्य होय छै, ऊ सर्गबद्ध ही होय छै। चंद्रप्रकाश जगप्रिय रों अंगिका खंडकाव्य रोमपाद सर्गबद्ध खंडकाव्य ही छेकै। नंदलाल यादव सारस्वत के आलोच्य प्रबंध काव्य अतिरथी भी सर्गबद्ध छै। एक बात यहाँ बताय देना जरूरी छै कि खंडकाव्य सर्गविहीनो हुएँ पारें आरो हेनों खंडकाव्य ज्यादातर प्रगीत कोटि के होय छै जेकरा में मस्तिष्क सें बेसी हृदय पक्ष के प्रधानता रहै छै। जहाँ तक अतिरथी के बात छै ई अपनों रूप में साफ-साफ खंडकाव्य के रूप प्रस्तुत करै छै। एकरों चार सर्ग में बस एक्के घटना वर्णित छै—इन्द्र द्वारा छल सें कर्ण के कवच-कुंडल लेना। पाँचवों सर्ग तें कवि के विचार छेकै—ऊ घटना सें अप्रत्यक्ष रूपों सें जुड़लों छै जे खंडकाव्य सें अलगो होय जाय, तें काव्य कें कोय क्षति नै होयवाला। यहाँ कथा में ऊ फैलाव भी नै छै जे खंडकाव्य लेली जरूरी छै—एकदम गपस, एक घटना।

पात्र-विधान

खंडकाव्य में जेना एक मुख्य घटना होय छै एकआध प्रासंगिक कथाओ हुएँ पारें मतुर ऊ मूल कथा सें एकदम जुड़लों रहें—जेना अतिरथी में छै—इन्द्र के छल सें सावधान करै लेली सूर्य के कर्ण के समक्ष उपस्थिति, आरो इन्द्र के विप्रभेष में छल करवों—ई दोनों कथा हेनों गुँथलों छै कि एक सें अलग दिखवे नै करै छै। कथानके नाँखीं खंडकाव्य में पात्रो दू-तीन सें बेसी नै होय छै। पंचवटी में राम, लक्ष्मण आरो शूर्पनखा छै, (होय के तें सीताहो छै, पर एकदम गौण) वहू में राम आरो शूर्पनखा ही छै प्रमुख। ठीक यहा रं अतिरथी में कर्ण आरो इन्द्र ही दू प्रमुख पात्र छै, सूर्य साथें युधिष्ठिर, भीम सहायक पात्र नाँखी उपस्थित छै। अतिरथी के संदेश आरो संवाद कर्ण आरो इन्द्र के बीच सें ही प्रकट होय छै आरो यही सफलता ई काव्य कें सफल खंडकाव्य घोषित करै छै ।

शैली आरो शिल्प

हेना कें तें अधिकांश खंडकाव्य घटनाप्रधान ही होला के कारण वर्णनात्मकता के नीरसता सें ग्रसित रहै छै, मतुर कवि सारस्वत के काव्य अतिरथी संवादाश्रित होला के कारण आरो भाषा के लालित्य सें पूर्ण होला के कारण, शैली के दृष्टियो सें ई एक सुन्दर काव्य-कृति बनें पारलों छै । काव्य के शुरु सें लैकें आखरी तांय भाषा शरत रितु के नदी के जल नाँखी निर्मल, पारदर्शी छै । पूरे काव्य में कवि कहीं भी भाषा के चमत्कार दिखावै के कोशिश नै करै छै। जों कहीं अलंकार ऐलों छै तें ऊ एत्तें सरल आरो सहज छै कि अर्थ ग्रहण करै में कोय दिक्कते नै होय छै। नीचे के पंक्ति द्रष्टव्य छै :

केन्हों चमकै कवच कुंडलो
सूर्य छाती-कानों में झूलै
आकि कोनों स्वर्ण कमलदल
काया-मानसरोवर फूलै!

सर्ग आरो छंद विधान

महाकाव्य में चूँकि विस्तृत कथा कें उठैलों जाय छै, यै लेली वहाँ सर्गो

के कमी नै होय छै। खंडकाव्य में एक घटना होला के कारण कभियो-कभियो एक्को सर्ग नै रहै छै जेना गुप्त जी के काव्य पंचवटी आरो निराला जी के तुलसीदास खंडकाव्य में ही। एकरो विपरीत अतिरथी पाँच सर्ग में विभाजित मात्र एक सौ चौतीस छंदों में बद्ध छै।

महाकाव्य जेन्हों प्रबंध में तें छंद प्रत्येक सर्ग में अलग-अलग रखै के विधान होय छै, फेनु प्रत्येक सर्ग के आखरी में अलग छंद मतर उपयुक्त तें यही मानलों जाय छै कि महाकाव्य रों प्रत्येक सर्ग एक ही छंद में बंधलों रहें, तें उचित। खंडकाव्य तें शुरू सें लैकें आखिर तांय प्रायः एक्के छंद में रहै छै आरो यहा बात सारस्वत के खंडकाव्य 'अतिरथी' में देखलों जावें सकै छै। कवि चौपाई वर्ग के दू रूप में सौंसे खंडकाव्य कें गुँथलें होलें छै। ई छंद छेकै चौपाई आरो चौपई । चौपई १५ मात्रिक छंद छेकै जे चौपाई के अंतिम दू गुरु में से आखरी गुरु कें लघु करी देला सें बनै छै । ई पूरे खंडकाव्य के एक सौ उनचास छंदों में मात्र चार बार ई चौपई छंद के प्रयोग होलों छै, नै तें ओरी सें लैकें अंत तांय सोलह मात्रिकवाला चौपाई छंद के ही प्रयोग होलों छै। जेना एकरों निर्देश लें ही प्रबंधकार सारस्वत नें दोनो छंदों के उदाहरण काव्य कें ओरिये में रखी देलें छै। देखियै :

पांडव सेना में उथल-पुथल
युद्धों में मुश्किल लगै जीत,
जब तक करणों के पास कवच
कुंडल छै अद्भुत सैन्यमीत

ई चारो चरण चौपाई आरो चौपई छंद सें बनलों छै । दोसरों आरो चौथों चरण चौपई के चरण छेकै जे तीन चतुष्कल आरो ऽ। वाला एक त्रिकल सें बनलों छै । नीचें चौपाई के एक उदाहरण द्रष्टव्य छै :

कवच-कुंडले काफी छै बस
ई रण के फल बदलै लेली
हाथी के गोडों नीचू में
की टिकतै ई फूल चमेली!

■■

अतिरथी

प्रथम सर्ग

'पाण्डव-सेना में उथल-पुथल
युद्धों में मुश्किल लगै जीत
जब तक कर्णों के पास कवच
कुण्डल छै अद्भुत सैन्यमीत ।'

'कवच-कुण्डले काफी छै बस
ई रण के फल बदलै लेली
हाथी के गोड़ों नीचू में
की टिकतै ई फूल चमेली ।'

'जानै छी कि सेना हमरों
कोय माने में कटियो नै कम
की धरती के नर-दानव कें
करी देवतौ कें दै बेदम ।'

'एक पलों में तहस-नहस के
तांडव करी दें, परलय आबें
लेकिन कर्णों कें के जीतें
जेकरा कुण्डल कवच बचावें ।'

'माय-बाप रं ऊ दोनों ही
छाती-कानों सें सटलों छै
जन्में सें आशीष बनी कें
आय तांय भी नै हटलों छै ।'

'आरो जब तक ई दोनों ही
कर्णों के देहों पर रहतै

कोनो अस्त्र सहस्त्रो छोड़ों
एक अकल्ले कवचें सहतै ।'

'छूऐ सें पहिले ऊ अस्त्रे
लौटी ऐतै, टूटी जैतै
हेनों हाल में फल युद्धों के
की नै हार में जीत विलैतै ?'

'जानै छी कि कृष्ण पक्ष में
हमरों हित लें ठाड़ों होलों
लेकिन जब तांय कवच सुरक्षित
की करतै हुनिये तें बोलों ।'

'हम्में की तीनो लोको तक
शक्ति कैन्हें नी सब झोकी दें
कुण्डल-कवच में ऊ ताकत छै
जे कालो के गति रोकी दें ।'

केन्हों चमकै कवच कुण्डलो
सूर्य छाती-कानों पें झूलै
आकि कोनो स्वर्ण कमलदल
काया-मानसरोवर फूलै ।'

'कहाँ कृष्ण भी बोलै कुछ छै
कुछ टोकों तें तभियो मौने
लागै युद्ध जीती लै जैतै
दुश्मन एकरा औने-पौने ।'

'देखै छौ दुश्मन-दल केन्हों
उछली-उछली भाला भाँजै

तीर-धनुष तलवार नचाबै
भोररिया दुपहरिया, साँझै ।'

'दुश्मन के बल, कर्ण-भरोसों
कर्ण कवच-कुण्डल पर टिकलों
ओकरा यहीं बचैलें राखे
आय तलक जों छै ऊ बचलों ।'

'ढाढस भले बंधाबों तोहें
हमरों जी भीतर सें डगमग
हिन्नें सैन्य-शिविर में तम छै
हुन्नें सैन्य-शिविर छै जगमग ।'

'कल्हे सें कर्णों सेना में
केन्हों खुशी के गीत-नाद छै
हिन्ने तें शंका ही शंका
शंके के सौ-सौ समाद छै ।'

एतना कही युधिष्ठिर केरों
दोनों ठोर मिली चुप होलै
जेना भीतरे-भीतर दुःख के
गाँठ-गिरह कें विह्वल खोलै

अर्जुन ई देखी कें उठलै
वीर पुरुष रं सभा बीच में
कोनो दिव्य कमल जों खिललों
रहें निराशाजन्य कीच में

आरो बोलें लागलै—'डर नै
जब तांय हमरों साथ कृष्ण छै

राह निकलनै छै केन्हौ कें
कतनो अन्धड़, आग, पवन छै ।'

'बड़ों-बड़ों संकट में हुनिये
राह दिखैनें छै उबरै के
सब निश्चिन्त रहों, नै चिन्ता
कोय्यो नै छै बात डरै के ।

'हुनियो चिन्तित होबे करतै
ई बातों कें लैकें, जानों
एत्तें बड़ों विपत्ति सम्मुख
उदासीन नै होतै; मानों ।'

'अभी वहाँ पहुँचै छौं हम्में
हटें, हटाबों घोर निराशा
एतने बात बुझी कें चलियों
हमरे पक्षों में छै पासा ।'

कौन्तेय के ई वीरवचन सें
सभा बहुत हरखित भै गेलै
युद्ध-विजय के भाव अनोखा
सबके चेहरा पर छै खेलै

भीम, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर
वीरभाव सें सज्जित भेलै
भाव-निराशा के पर्वत कें
मन के धक्का सें छै ठेलै ।

लगलै जेना गहन रात में
भोर हठाते किरिन बिखेरै

कानी कें सुतलों बुतरू पर
माय ममता के ऊंगली फेरै ।

दूसरों सर्ग

'एक तें वीर बहुत बलशाली
महाधनुषधर अतिरथी होने
ओकरों सम्मुख तें कालो भी
पल भर लागै ठिगने-बौने ।'

'कौन्तेय भी ई बात कें जानै
कृष्णो कें मालूम छै सबटा
जब तक कुण्डल-कवच सुरक्षित
हार कर्ण के सोचबों झुट्टा ।'

'कर्ण तेजस्वी, अतिरथी अद्‌भुत
केकरौ की बुझतै ऊ मानी
जेहनों महारथी ऊ होने
धरती पर छै अद्‌भुत दानी ।'

'दानी' याद ई ऐथैं सुरपति
चमकी उठलै पल भर लेली
मन पर पड़लों बोझ दुखों के
देलकै कोसो दूर धकेली ।

'दान' यही बस एक राह छै
ऊ अतिरथी के बल छीनै के
आरो नै कोनो उपाय छै
ओकरों प्राण हरै के, लै के ।'

'दान' यही बस एक राह छै
जेकरा सें बंधलों ऊ राधेय
जों माँगी लौं दान में कुण्डल
आरो कवच तें विजयी कान्तेय ।'

'युद्ध नीति में पाप-पुण्य के
की माने छै, के मानै छै
आपनों जीत हुएँ बस केन्हौ
नीति यही एतनै जानै छै ।'

'देखी रहलों छियै यही तें
विनय-धर्म के खिल्ली उड़तें
के राखौ पारै छै एकरा
युद्धभूमि में लड़तें-लड़तें ।'

'भले विधर्मी कहतै हमरा
आरो छली, अनैतिक कहतै
लेकिन मन जे अभी सहै छै
ऊ तें कलकों बाद नै सहतै ।'

'हों, हमरा कल ही जाना छै
याचक बनी कें विप्र-भेष में
धरती पर जे स्वर्ग जकां छै
वही पुरातन अंग देस में ।'

सोची-सोची सुरपति गदगद
लै लेलें छै कवच आ कुण्डल
अर्जुन के हाथों में स्थिर
युद्धभूमि के सौंसे मण्डल

कवचहीन, कुण्डल से हीनो
कर्ण अनाथों रं लागै छै
पकड़ै लें ऊ भाग्य बढ़ै छै
भाग्य तीर रं ही भागै छै ।

विपदा पर विपदा आवै छै
महादान सें महारथी पर
मुसकै भीतरे-भीतर सुरपति
अतिरथी हेनों वीरव्रती पर ।

देखै छै आँखी सें सुरपति
बादल महाप्रलय के आबै
आरो बीच समुन्दर बीचे
महापोत कें घेरी डुबाबै ।

तेसरौं सर्ग

गुजगुज रात अन्हरिया छेलै
बस मशाल के ही इंजोर में
चमकै शीशा केरों झालर
जेना सूरज किरिन भोर में ।

सैनिक भेषों में ओघरैलों
अंग देस रों कर्ण प्रतापी
आँखी में सपना हेलै छै
सब उबाल रखलें छै थापी ।

बात मनों में ढेरी-ढेरी
एक्के साथ उठी रहलों छै
सावन-भादो के बोहों जों
चानन-चीरों में बहलों छै ।

सोचै छै—'कल की-की होतै
जीत विजय लें की-की करबै
जे हमरों बैरी मन-धन के
ओकरा मारी कें ही मरबै ।'

'हमरों कुल कें नीच कहें जे
हमरों मन कें हीन बताबें
ओकरे लें तें समय युद्ध ई
ओकरा बचना मुश्किल आबें ।'

'अबकी निर्णय होय कें रहतै
वंश बड़ों या शील शौर्य छै
ओकरों गोड़ तें टुटले ही छै
जे ठुट्ठा पीपर पर नाँचै ।'

'भगवानों के आड़ लै करी
करें कोय अन्याय अगोचर
सब के एक नतीजा होतै
कुछ कलंक जाय भगवानो पर ।'

'की रं हाँफै छै अधर्म ठो
की रं छै अन्याय प्रसन्नो
छल के छाया, अनाचार के
देखौं, हम्में जाय छी जन्नो ।'

'विधियो ठो अन्याये के संग
जरियो सोच-विचार कहाँ छै
पुण्य-धर्म के सम्मुख पापी
तनियो टा लाचार कहाँ छै ।'

'कलियुग के आरम्भे में ई
कलियुग रों ई घोर अमावश
खड़ा फसल पर सतहा जेहनों
ई घनघोर प्रलय के पावस ।'

जे निर्दोष वही छै दोषी
अरे कर्ण धिक्कार तोरा छौ
जों चुप बैठें—जरियो भय सें
हेरै ई संसार तोरा छौ ।'

लिखना छौ इतिहास तोरा ऊ
जे लिखले ही नै गेलों छै
आनै छै ऊ भोर भुरुकवा
जे अब तांय भी नै ऐलों छै ।'

'आरो की-की अभी उठतियै
किसिम-किसिम के भाव मनों में
कि तखनी ही फैली उठलै
अजगुत रं इंजोर क्षणों में ।'

चमकी उठलै कक्ष कर्ण रों
सूर्ये रं पावी इंजोर कें
यहें बुझैलै कोय ऐलों छै
लादी आनलें रहें भोर कें ।'

धड़फड़ाय कें उठलै, देखै
अजगुत दिरिश अनोखा खेला
कक्ष-द्वार पर किरिन पुंज रों
लगलों होलों ठेलम-ठेला ।

वही किरिन के बीच पुरुष इक
आकुल-व्याकुल चिन्ता सें छै
मुकुट-वसन सब अस्त व्यस्त रं
जेना सो असगुन कें बाँचै ।

पहिलें तें विश्वास नै होलै
जरियो टा भी कर्ण वीर कें
आ शंका में पकड़ी लेलकै
तरकस में तनलों तुनीर कें ।

तभिये स्वर इक गूंजी उठलै
'वत्स, नै द्वारी पर बैरी छौं
तोहरे पिता खड़ा छौ आबी
दुख आबै में कुछ देरी छौं ।'

'कल जखनी पूजा पर होभौ
पूजा करी उठी कें ठाड़ों
सम्मुख पैबौ एक विप्र कें
याचक रूपों में छौं खाड़ों ।'

'छदमी तोरों ऊ जीघाती
तोरों जानों के हन्ता छौं
तोहें छल में नै अइयों बस
एकरे हमरा ही चिन्ता छौं ।'

'तोहें कुछ माँगै लें कहभौ
कवच-कुण्डले कें ऊ लेतौं
एक्के जिद बस कवच-कुण्डले
कुच्छुवो सें संतुष्ट नै होतौं ।'

'समझी लीयों छली इन्द्र ऊ
तोरों प्राणों के ऊ घाती
यहें कहै लें ऐलों छीयौं
भोर सें पहिलैं रातिये राती ।'

'तोरों जय–ई कवच-कुण्डले
कवच-कुण्डले दुश्मन पर जय
एकरों छिनतें ही समझी लें
छिनी गेलौं तोरों जय अक्षय ।'

'कुरुक्षेत्र के भाग्य पलटतौं
एकरे रहलैं सें जानी ला
एकरों छिनथैं भाग्य छिनैतौं
बात गेंठ सें ई बान्ही ला ।'

'कवच-कुण्डले परिचय तोरों
कवच-कुण्डले जाति-वंश भी
कवच-कुण्डले ही माय तोरों
कवच-कुण्डले पिता अभी ।'

'एकरों रहतै तीन लोक के
तीन करोड़ो पानी भरथौं
एकरों जैथैं निर्बल रेखा
बली बनी कें उपटी ऐथौं ।'

'काल बनी विपरीत खड़ा छौं
आबै लें तोहरों द्वारी पर
संभलों पूत, भाव कें बांधों
बाघ बैठलों छौं बारी पर ।'

'जे याजक आबै वाला छै
विप्र बनी कें विप्र कहाँ ऊ ?
छली इन्द्र बहुरूपिया छेकै ।
मति एकरा में करियों नै दू ।'

'माय-बाप रों स्नेह छेकौं ई
कवच आरो कुण्डल भर नै ई
दोनों के आशीष समझियो
आरो कुछ की कहौं अभी'

'भोर होय में बेर नै ज्यादा
बस चेताय लें आबी गेलियौं
चूक जरो नै करियो बेटा
जीतों रहों अखम्मर ! चलियौं !'

एतना कही अलोपित होलै
सूर्य–स्वर्ण के दिप-दिप काया
कर्ण अकेलों बैठी सोचै
'की अजगुत, केन्हों ई माया ।'

'माया नै ऊ पिता ही छेला
केन्हों दिव्य रूप ऊ अजगुत
आय तलुक नै देखें पैलौं
सुन्दरतौ सें बढ़ी कें अदभुत ।'

'पुरुष ऋषि रं, चिंता कातर
रूप देवतौ सें भी बढ़ी कें
ऐलों छेला पिताहै निश्चय
किरिन रथों पर चढ़लें, चढ़ी कें ।'

अपने आप झुकी सर गेलै
कर्ण महावीरों के तत्क्षण
'धन्य-धन्य छै हमरों जीवन'
बात उठै छै एक्के क्षण-क्षण ।

आँख मुँदी ऐलै कर्णों रों
तभियो रूप वही घूमै छै
लागै ओकरा रही-रही कें
ओकरों भाल पिता चूमै छै ।

चौथों सर्ग

सूर्य, स्वर्ण के कुंभ, झलकलै
भोरकों लाली बिछलों-बिछलों
अभियो ओस दिखाबै छेलै
दुबड़ी सबटा सिंचलों-सिंचलों ।

कर्ण अभी तांय आसन पर ही
आँख मुनी कें बैठलों होलों
ध्यान सूर्य पर ही टंगलों छै
कुश-अक्षत चन्दन में धोलों ।

कि चिड़ियाँ सब चिकरी उठलै
नै जानौं कौनी ठो भय सें
भरी गेलै कर्णों के मन ठो
अनचिन्हार सौ-सौ संशय सें

रातको बात सुधि में ऐलै
लगलै पिता बगल में ठाड़ों
बोलै—''बेटा आवी गेलौं
सब्भे टा भ्रम-संशय फाड़ों ।'

'वचन निभाबै के फेरा में
पूत, गँमैयों नै प्राणों कें
छीनै लें ऐलों छै छलिया
धरती के सूरज-चानों कें ।'

'एकरों जैतैं रात उतरतौं
महाप्रलय के अंधियारा रं
जेकरा में तोरों जीवन ई
छितरैतौं टुटलों तारा रं ।'

अन्तिम फूल चढ़ाय कें कर्णें
भगवानों कें नमन करलकै
सम्मुख इक याचक कें देखी
चेहरा पर मुस्कान उभरलै

बोलें लागलै कर्ण, 'विप्रवर,
अनचोके आबै के कारण ?
कैन्हें चिन्ता के बोझों कें
चेहरा पर करलें छौ धारण ?'

'की कोनो दैहिक बाधा छै
या कोनो दैविक छौं बाधा
या भौतिक तें जल्दी बोलों
कोन विपत्ति हौ नर-मादा ?'

सुनथैं बोली उठलै याचक
'याचक छी, माँगै लें ऐलियौं
तोरों अपयश भारी होतौं
जों खाली हाथे ही गेलियौं ।'

‘तोरों दान कथा दुनियैं नै
स्वर्गलोक भी जानैं, मानैं
तोरों रं नै दानी पाबै
कत्तों मिली कें सब्भैं ध्यानै ।’

‘अंग देस तें दान-पुण्य के
धरती परकों स्वर्गे छेकै
कोय्यो देव कैन्हें नी होवें
हेकरे दिश बस टुकटुक ताकै ।’

‘वही देश के तोहें दानी
जहाँ मथैलै सागर तक भी
अमृत के जे देश मनोहर
धन्य-धन्य तोरा जे पाबी ।’

‘अंग देस पर बहुत-बहुत छै
दानी आरो सतकर्मी भी
लेकिन तोरों हेनों के छै
महाप्रतापी संग धर्मी भी ।’

‘दान-धर्म कें पुण्य कर्म रं
तोहें जीवन में अपनैलौ
जीते जी ई यश के पैतै
जे जीते जी तोहें पैलौ ।’

‘हम्में याचक छी की मांगौं
देन्हैं छौं तें दै दा हमरा
कवच आरो कुण्डल ई दोनों
धन्य-धन्य लै होवों एकरा ।’

कवच आर कुण्डल सुनथैं ही
कर्ण हठाते चौंकी उठलै
होनै कें भौवैलै क्षण भर
नींद जेना आधे में टुटलै ।

'हाय पिता के वचन केना ऊ
भूली गेलै ठीक समय पर
हमरा जे पावी अचेत रं
उतरी ऐलै भाग्य अनय पर

'हाय पिता के पूजा पर ही
कोय याचक माँगें; नै बोलौं
कोय तरह सें ई नै होतै
कवच काटी कें बेशक खोलौं ।'

'दान कर्म तें अंग देस रों
माँटी के कण-कण में गड़लों
जे माटी में रजत-स्वर्ण सब
धूले-मांटी रं छै पड़लों ।'

के पूछै छै स्वर्ण कवच कें
कुण्डल की सिंहासन तक कें
अंग देस के लोगें देखै
कंकड़ रं सुर-आसन तक कें ।'

लेकिन हमरों कवच आ कुण्डल
खाली कंचन भर नै छेकै
ई हमरों संकल्प-पुण्यफल
कोय एकरा केना कें फेकै ।'

‘ई हमरों परिचय नै खाली
हमरों प्रण के सिद्धिदाता
हर विपदा में माय-ममता रं
आरो पिता जकां ही त्राता ।’

‘एकरा दै के मतलब छेकै
प्राण गमैबों कायर हाथें
प्रण तभिये तक पालें पारौं
जब तक ई दोनों छै साथें ।’

‘लेकिन याचक कें ठुकरैबों
एकरा सें नै पाप बढ़ी कें
आय भले नै बोलें, बोलें
कल बोलतै सर खूब चढ़ी कें ।’

‘की सोचै छौ मन में तोहें
जों कुछ हिचक उठी ऐलों छौं
तें बोलों लोटी कें जाय छी
पाप लगें जों फेनू आबौं ।’

‘हम्में तें जानी कें ऐलां
तोरों रं नै दानी भू पर
की धरती के कोना-कोना
ऊपरो तक नै देखौं द्यू पर ।’

एतना बोली चुप भै गेलै ।
भाव गमै के ही कोशिश में
चेहरा पर उठलै सोभावो
कौनी कौनी रं के किस्में

तभिये बोली उठलै राधेय
'सुनों विप्र भेषों में सुरपति
खाली हाथ नै कोय गेलों छै
आरो नै खाली हमरों सत् ।'

'तें केना कें तोहें जैभौ,
लेकिन हमरों एक अरज छै
आरो तोहें जे कुछ मांगों
जे मांगबौ, हमरा लें रज छै ।'

'मांगों एक देस की, सौ गो
ऊ भी जीती तोहरा देभौं
एक स्वर्ग की, सौ स्वर्गों कें
बोलौं दिन भर में लै ऐभौं ।'

'नै एकरा सें तोष अगर छौं
हमरों प्राण समेटी लै ला
लेकिन माँगों कवच नै कुण्डल
तोरों लें तें एक अधेला ।'

'हमरा लें संकल्प मनोरथ
हमरा लें सिद्धि जीवन के
विप्र बनी कें जों ऐलों छों
जीभ नै काटों तों गोधन के ।'

'कोय बात नै लौटी जाय छी
हम्में सुरपति तहियो याचक
लेकिन तोरों दान धर्म के
कल के होतौं बोलों वाचक ?'

‘कोय मोहवश हम्में मति ई
पपित कर्म के ओर झुकैलां
पाबियो कें की हम्में पैबों
जों हम्में ई पाबियो गेलां ।’

‘बात खुली तें जैबे करतै
बात खुली तें गेले ही छै
कल थुकतै सब हमरे मुँह पर
बदनामी तें भेले ही छै ।’

‘लोभ अगर जों ओछों हुएँ तें
यश ओकरा सें कहिया मिललै
भले कल्प के गाछ रहें ऊ
फूलों बदला कांटे खिललै ।’

‘कुछ वक्ती लें भले खुशी छै
कुछ वक्ती लें गदगद हो ला
लेकिन हीरा हाथ लगै नै
खाली गुदड़ी, खाली झोला ।’

‘लौटै छी, कतना की बोलौं
आपनों अन्तस कें की खोलौं
पाप कर्म के बोझ अथा छै
भीतरे भीतर एकरा तोलौं ।’

‘कवच आरो कुण्डल नै पाबौं
लेकिन अपयश तें लिखले छै
भले स्वर्ग के राह दिखाबें
एकरों अंत नरक लिखले छै ।’

'तोरों तें यश समय-काल सें
कभी नै बुझतौं कभी नै धूमिल
कभी नै मुरझैतौं कोय वक्ती
कभी नै होतौं चंचल-पंकिल ।'

'ठहरों सुरपति, ठहरों-ठहरों
हमरा नै कोय यश के किंछा
हमरों एक्के धर्म–दान बस
एक्के हमरों प्रण मनबिच्छा ।

ओकरे लें जोगैलें छी ई
कवच आरो कुण्डल कें हम्में
आय वहीं जों चाहै छों तें
छोड़ै छी सम्बल कें हम्में ।'

'आय जीत कें तेजी रहलौं
हार कवच रं पिहनी लेबों
सचमुच विधिये वाम कर्ण के
कत्तो हेलौं थाह नै पैबों ।'

एतना बोली वीर प्रतापी
स्थिर होलै कर्ण जरा टा
पिता सूर्य कें याद करलकै
मंत्र पढ़लकै मन-मन कै टा ।'

फेनू लै तलवार म्यान सें
छीली देलकै कवच देह सें
खींची लेलकै कान सें कुण्डल
जरियो टा नै मोह नेह सें

लथपथ लोहू सें सनलोॅ ऊ
सौंपी देलकै सुरपति हाथें
देव-पितर सब सन्न-काठ रं
है की भेलै बाते बातें ।

गूंजी उठलै दशो दिशा में
'कर्ण तोंही नरभूषण-नरपति
शील तोहीं सौन्दर्य धरा के
तोरोॅ सम्मुख की सुर-सम्पत्ति ?'

'इखनी कोय कुछ बोलें लिखी लें
कल जे ऊ इतिहास लिखैतै
वैमें तोरोॅ गुण-शीलोॅ के
कोय बराबर पद नै पैतै ।'

'तोंय भावी के एक उदाहरण
सौंसे दुनियाँ करतै धारण
तोरोॅ गुण कें यश-कीरत कें
पापोॅ के बस एक निवारण ।'

बरसें लागलै फूल स्वर्ग सें
हिन्नें सुरपति आरो बेकल
जिनकोॅ हाथोॅ में पड़लोॅ ऊ
कवच आर कुण्डल तक चंचल

सुरपति के चेहरा मलीन छै
जना कुहासोॅ बीच चनरमा
कर्ण सूर्य रं दिपदिप दीपै
भेद पेड़वा आरो पनरमा ।

बान्ही लेलकै वसन-बीच में
कवच आर कुण्डल कें झब-झब
की सोची आखिर याचक के
आँख हुवै छै भारी, डब-डब

भारी मन सें आखिर बोललै
'हे अंग देस के अंग राज
तोरों दानों पर तें अर्पित
छै कुरुक्षेत्र के विपुल ताज ।'

'है ला अमोघ ई अस्त्र विकट
जे जैतौं नै खाली कभियो
लेकिन बस ई एक मरतबा
बात नै राखियों टाली कभियो ।'

दै अमोघ ऊ अस्त्र तुरत्ते
सुरपति होलै अन्तर ध्यान
अंग देस रों रोआं कपसै
ऊपर में सूरज भगवान ।

पांचमों सर्ग

आकाशवाणी

'छल सें विजय, विजय नै छेकै
मानवता के ई तें द्रोही
जे कि सत्य पर टिकले रहतै
जन-इतिहास बनैतै वोंही ।'

'चाहे कतनो बड़ों विजय ऊ
पाप-पंथ पकड़ी जे पाबै

ऊ आबै वाला पीढ़िये नै
मानवतो कें खूब लजाबै ।'

'छल सें यश की हुएँ टिकाऊ
बारिस में पानी के फोका
जन्मै जेन्हैं, फूटै ओन्हैं
छल–गरमी में लू रों झोंका ।'

'पाप भले बोली लें कुछुवो
पुण्य कभी भी ऊ की होतै
नदी किनारा की पैतै वें
रेगिस्ताने में ऊ रोतै ।'

'जेकरों गोड़ पुण्य पर टिकलों
जेकरों साथी दान-सत्य छै
जेकरा आपनों हित नै बांधै
दुसरे लें सब कृत्य कृत्य छै ।'

'दुसरै लें जे जीयै, मरै छै
दुसरे लें जेकरों छै जीवन
वही धरा के देव कहाबै
ओकरे जीवन सफलो पावन ।'

'वही गढ़ै इतिहास नया कें
वही भावी कें रस्तो दै छै
ओकरै सें सम्मानित देशो
ओकरै युग-युग कल्पें पूछै ।'

'जे सिंहासन लें ही सोचै
ओकरै लें छल-छद्म करै छै

एक्के बार मरै के बदला
दिन में ही सौ बार मरै छै ।'

'जेकरा लें सिंहासन सब कुछ
नर-नरता कें तुच्छ बुझै छै
रातों में बस ओकरे फोटू
पुण्य कर्म कें पाप बुझै छै ।'

'गद्दी लें केकरो गर्दन कें
कभी उतारी लै जे पापी
सिंहासन पर दौड़ी बैठै
मानवता के ठोठों चाँपी ।'

'नर जेकरों लें गाजर-मूली
युद्धभूमि के कुक्कुर-माँछी
जे धर्मो के, पुण्यफलों के
ठोठो चीपै बीछी-बीछी

'की होतै नरभूषण ऊ नर
ओकरों छै इतिहासे छोटों
भीतर सें ऊ फोंके फोंकों
ऊपर सें ही लागै मोटों ।'

'ऊ सचमुच में नरपति छेकै
जे ई भूलै नै छै कभियो
कौनें हमरा गद्दी देलकै
के पीछू ताकत रं अभियो ।'

जेकरों पीछू जन बोहों रं
मुट्ठी भर लें नै सोचै छै

जे आपने परिजन-पुरजन लें
दुसरा के धन नै नोचै छै

'वहें रहै छै अमर देव रं
मृत्युलोक में, स्वर्गलोक में
ओकरे लें सब विह्वल रहै छै
कठुवैलों रं बहुत शोक में ।'

अतिरथी कर्ण कभी की मरतै
कालों के माथा पर चढ़ी कें
ऊ तें जीत्तों रहतै कल्पौं
नियति आरो भाग्यो सें बढ़ी कें ।'

'आय कीर्ति छै भले मलिन रं
कलको युद्ध-समर पुरला पर
अंग, अंग के कर्ण-कथा सब
घुरतै नया समय घुरला पर ।'

'ओकरे यश सें यशपति होतै
सौंसे लोक, धरा, पातालो
आय भले विपरीत काल छै
कल अनुकूल ही रहतै कालो ।'

'कलकों छै इतिहास अंग के
अंगराज अतिरथी कर्णों के
कल उत्सव जन्मों के होतै
भले मनाबों कोय मरनों के ।'

'धन्य अंग तोंय अंगराज के
खुला नीड़ रं गरुढ़-बाज के

रक्षक सब लोगों के लाज के
धन्य अंग तोंय अंगराज के ।'

■■■